ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 40 कुल पृष्ठ-8 31 मई से 6 जून, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 आ.कृ.-04

हरिद्वार चलो! हरिद्वार चलो!!

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में

6 जुलाई, 2018 के दिन सायं 4.00 बजे

योगगुरु स्वामी रामदेव जी

द्वारा

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन का उद्घाटन

स्वामी आर्यवेश
सभा प्रधान

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
अध्यक्ष गुरुकुल महासम्मेलन

पं. माया प्रकाश त्यागी
कोषाध्यक्ष

स्वामी यतीश्वरानन्द
स्वागताध्यक्ष गुरुकुल सम्मेलन

प्रो. विट्ठलराव आर्य
सभा मंत्री/संयोजक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

'महर्षि दयानन्द भवन' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली—110002

दूरभाष : 011—23274771, 23260985, 9013783101, 9849560691, 9354840454, 8218863689

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

आर्य समाज का एक और स्तम्भ गिर गया

हरियाणा में शराबबन्दी आन्दोलन के पुरोधा श्री अतर सिंह आर्य क्रांतिकारी का असामयिक निधन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने 20 मई, 2018 को उनके निवास स्थान नलवां (हिसार) पर आयोजित प्रेरणा सभा में सम्मिलित होकर दी श्रद्धांजलि

आर्य समाज के एक मजबूत स्तम्भ के रूप में विख्यात हरियाणा में शराबबन्दी आन्दोलन को अपने जीवन का मिशन बनाकर वर्षों से संघर्षरत पुरोधा श्री अतर सिंह आर्य क्रांतिकारी का गत दिनों असामयिक निधन हो गया, वे 70 वर्ष के थे।

महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा के समर्पित अनुयायी तथा जीवन में आर्यत्व को मनोयोग से अपनाने वाले कर्मठ, संघर्षशील, तपस्वी एवं अद्भुत लगन के धनी श्री अतर सिंह आर्य क्रांतिकारी ने अपना पूरा जीवन आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में समर्पित किया हुआ था। उन्होंने जीवनभर अनेक उतार–चढ़ाव एवं संघर्ष के रास्तों से गुजरते हुए अपने जीवन को पूरी तरह से तपा लिया था। शराब को पूर्णतया बन्द कराने के लिए उन्होंने हरियाणा में शराबबन्दी आन्दोलन का वर्षों तक नेतृत्व किया तथा इसके लिए हिसार की जेल में भूख हड़ताल भी की। उनकी कथनी और करनी में कोई फर्क नहीं होता था। वे अत्यन्त स्पष्टवादी थे तथा सत्य कहने से कभी भी नहीं झिझकते थे। आर्य समाज के सशक्त युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के साथ वे 1975 से जुड़े तथा उसके बाद वे कभी पीछे नहीं हटे और अन्तिम श्वांस तक परिषद् को अपना संरक्षण देते रहे। स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी शक्तिवेश जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी व स्वामी आर्यवेश जी तथा बाद में स्वामी ओमानन्द सरीखे संन्यासियों के सान्निध्य में रहकर अतर सिंह क्रांतिकारी ने आर्य समाज का कार्य करने का अभ्यास किया तथा स्वयं एक आदर्श व्यक्तित्व के धनी बने। उनके जीवन की वह रोमांचित करने वाली घटना कभी भुलाई नहीं जा सकती जो उन्होंने करके दिखाई। जब उनका नौजवान बेटा सुरेन्द्र सिंह आर्य एयर फोर्स में भर्ती होकर कुछ ही दिनों के बाद दिवंगत हुआ तो क्रांतिकारी जी अपनी ससुराल ग्राम बालसमन्द, हिसार में शराब के ठेके के विरुद्ध धरना चला रहे थे और उनका संकल्प था कि शराब का ठेका जब तक बन्द नहीं होगा तब तक वे धरने से नहीं उठेंगे। जब उन्हें पुत्र की मृत्यु का समाचार दिया गया और आग्रह किया गया कि वे पुत्र के दाह संस्कार में सम्मिलित होने के लिए अपने गाँव चलें तो उस वीर पुरुष ने यह कहकर मना कर दिया

कि मैं अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर अपने पुत्र की अन्त्येष्टि में शामिल नहीं हो सकूंगा लेकिन जब सैकड़ों लोगों ने उन्हें यह आश्वासन दिया कि वे दुःख की इस घड़ी में परिवारजनों का ढांढस बंधाने तथा अपने पुत्र के अन्तिम संस्कार में चल पड़ें, हम सब इस धरने को तब तक जारी रखेंगे जब तक बेटे की अन्त्येष्टि तथा शांति यज्ञ आदि सभी प्रक्रियाओं को पूर्ण कर वे लौट नहीं आते। क्रांतिकारी जी ने लोगों के आग्रह को मानकर अपने पुत्र को मुखाग्नि दी तथा विशाल जन–समूह को इसे ईश्वर की व्यवस्था कहकर अश्रुपूरित लोगों का ढांढस बंधाया। लेकिन स्वयं अत्यन्त धैर्य का परिचय देते हुए इस पहाड़ के समान दुःख को उन्होंने झेल लिया। स्वामी आर्यवेश जी ने प्रेरणा सभा में उनके जीवन पर विस्तार से प्रकाश डालकर उनके देहान्त को आर्य जगत की अपूर्णीय क्षति बताया तथा उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रेरणा सभा से पूर्व दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय के प्रचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी ने शांति यज्ञ सम्पन्न कराया और उसके पश्चात् प्रेरणा सभा का संचालन भी कुशलता के साथ संभाला।

इस अवसर पर सर्वश्री चौ. हरि सिंह सैनी पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार तथा प्रधान आर्य समाज हिसार, श्री धर्मवीर सांसद भिवानी, स्वामी रामवेश जी प्रधान नशाबंदी परिषद्, स्वामी सर्वदानन्द जी कुलपति गुरुकुल धीरणवास, डॉ. आर.एस. सांगवान सिरसा, श्री राम कुमार आर्य प्रधान वेद प्रचार मण्डल हिसार, श्री शमशेर सिंह आर्य प्रधान हरियाणा राज्य गौशाला संघ, पं. कर्मवीर शास्त्री धर्माचार्य हिसार, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा, श्री जगदीश सरपंच रतेरा, चौ. बदलू राम आर्य मुकलान, श्री रामपाल दहिया प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, श्री सूबे सिंह आर्य किसान यूनियन, श्री बिरजानन्द एडवोकेट महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, श्री राजेन्द्र सिंह पूर्व सरपंच, श्री दलवीर सिंह सातरोड, श्री सूबेदार हरिसिंह सरदाना, श्री सूबे सिंह आर्य मुकलान, श्री सतीश कुमार, श्री राज कुमार नैन, श्री धर्मपाल आर्य, श्री इन्द्र सिंह प्रहरी, श्री कपूर सिंह छावड़ा, महाशय फूल सिंह आर्य, श्री निहाल सिंह आर्य सेवानिवृत्त थानेदार, श्री अंकित शास्त्री आदि ने भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर क्रांतिकारी जी के जीवन से प्रेरणा लेने का संकल्प दिलाया। इस अवसर पर हरियाणा के किसान नेता चौ. घासीराम नैन के सुपुत्र श्री जोगेन्द्र नैन अध्यापक नेता मा. राय सिंह आर्य जीन्द, श्री राजमल ढाका प्रधानाचार्य गुरुकुल धीरणवास, श्री नत्थू सिंह आर्य गुरुकुल धीरणवास, सेठ बजरंग लाल आर्य, स्वामी ब्रह्मानन्द हिसार, श्री परमजीत शास्त्री कन्या गुरुकुल ढोभी, श्री भीष्म शास्त्री मंत्री आर्य समाज सिरसा, श्री मधुर प्रकाश उपमंत्री सार्वदेशिक सभा, श्री सुरेन्द्र सिंह नैन, श्री सर्वमित्र आर्य, श्री शेर सिंह आर्य, श्री धर्मपाल शास्त्री भांडवा, श्री कृष्ण कुमार बब्बर प्रधान आर्य समाज हांसी आदि भी प्रेरणा सभा में सम्मिलित हुए।

श्री अतर सिंह क्रांतिकारी ने कई वर्ष से वानप्रस्थ लेकर महात्मा अतर सिंह स्नेही के रूप में पहचान बना ली थी। अतः सभी महानुभावों ने उन्हें महात्मा जी या स्नेही जी के रूप में ही स्मरण किया। महात्मा जी के छोटे भाई भी धूप सिंह सरपंच तथा उनके सुपुत्र श्री राजवीर आर्य ने आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रेरणा सभा में हरियाणा के कोने–कोने से भारी संख्या में लोग सम्मिलित हुए। शांति पाठ के साथ सभा समाप्त हुई।

खुर्जा में कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर का किया गया भव्य आयोजन

सुसंस्कृत परिवार, समाज व राष्ट्र का निर्माण करने के लिए कन्याओं को संस्कारित करना होगा

– स्वामी आर्यवेश

कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविरों का आयोजन प्रतिवर्ष होगा

– डॉ. धीरज सिंह

माताएँ व बहने धर्म के नाम पर अन्धश्रद्धा व अन्धविश्वास को तत्काल छोड़ें

– बहन पूनम आर्या

खुर्जा, बुलन्दशहर, अलीगढ़ तथा आस–पास के क्षेत्रों से आईं 200 कन्याओं ने प्राप्त किया प्रशिक्षण

आर्य समाज बलदेव आश्रम, खुर्जा (बुलन्दशहर) के तत्वावधान में कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर का भव्य आयोजन 20 से 26 मई, 2018 तक ए.के.पी. इण्टर कॉलेज खुर्जा, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश में आयोजित किया गया। 7 दिन तक चले इस महत्त्वपूर्ण शिविर में बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा एवं संयोजिका बहन पूनम एवं प्रवेश आर्या ने कन्याओं को चरित्र निर्माण, स्वावलम्बन तथा स्वयं सुरक्षा के महत्त्वपूर्ण गुर सिखाये। इसके साथ ही राष्ट्रभक्ति, समाजसेवा, मातृ–पितृ सम्मान तथा गुरुजनों के प्रति आदर भाव की प्रेरणा प्रदान की।

इस शिविर का उद्घाटन खुर्जा देहात के एस.पी. श्री रईश अख्तर ने किया। विभिन्न अवसरों पर प्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा कन्याओं को जीवन को उन्नत बनाने की प्रेरणा प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त खुर्जा की एस.डी.एम. श्रीमती रीतू पुनिया तथा तहसीलदार श्रीमती प्रभा जी के अतिरिक्त गणमान्य व्यक्तियों ने भी कन्याओं को सम्बोधित किया। कन्याओं को प्रशिक्षण प्रदान करने वालों में बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, संयोजक बहन प्रवेश आर्या, एकता तथा सुमन जी ने विशेष पुरुषार्थ किया। इस शिविर में खुर्जा, बुलन्दशहर तथा आस–पास के क्षेत्रों की लगभग 200 कन्याओं ने भाग लिया।

शिविर के समापन अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि सुसंस्कृत नारी ही सुसंस्कृत परिवार, समाज व राष्ट्र का निर्माण कर सकती है। एक कन्या के प्रशिक्षण से दो परिवार संवरते हैं। इसके अतिरिक्त कन्याओं में आत्मबल पैदा होता है जिसके कारण उन्हें जीवन पथ पर हिम्मत के साथ आगे बढ़ने में सहायता मिलती है। स्वामी जी ने कहा कि इन शिविरों की अन्यतम विशेषता है, चरित्र निर्माण के प्रति जागरूकता पैदा करना, जीवन में आत्मानुशासन के प्रति प्रतिबद्धता लाना, माता–पिता तथा आचार्यों के प्रति सद्भावना पैदा करना, ईश्वर के प्रति आस्था पैदा करना, संयम व सहनशीलता के समन्वय की शिक्षा देना। इस प्रकार इन सात दिनों के प्रशिक्षण काल में कन्याओं को शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, आरोग्यता के प्रशस्त पथ पर चलने का प्रशिक्षण देना इस शिविर का उद्देश्य है। स्वामी जी ने उपस्थित जनसमूह को प्रेरित करते हुए कहा कि कन्याओं को आगे बढ़ाने के लिए आप सबको विशेष प्रयास करने होंगे। कन्याओं को जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते रहने की नितान्त आवश्यकता है और इसके लिए इस प्रकार के शिविरों से बहुत सहायता मिल सकती है। समय–समय पर लगने वाले इन शिविरों में आप अपनी कन्याओं को अवश्य भेजें और उनके जीवन निर्माण में उनके सहयोगी बनें। स्वामी जी ने कहा कि इस शिविर को सफलता पूर्वक सम्पन्न कराने में प्रसिद्ध समाजसेवी तथा आर्य प्रतिनिधि

सभा, उ. प्र. के प्रधान डॉ. धीरज सिंह जी की विशेष भूमिका रही जिन्होंने अथक पुरुषार्थ करके इस कार्यक्रम को प्रशंसनीय तथा दर्शनीय बना दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के प्रधान डॉ. धीरज सिंह जी ने इस अवसर पर अपने सम्बोधन में कहा कि इस प्रकार के चरित्र निर्माण एवं योग शिविरों का आयोजन हम प्रतिवर्ष करेंगे और हजारों बेटियों को अच्छे संस्कार देने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। उन्होंने उत्तर प्रदेश के सभी आर्य समाजों से अपील की कि ऐसे कन्या चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन करें और कन्याओं को संस्कारित करें।

शिविर के समापन अवसर पर बहन पूनम आर्या ने सभी कन्याओं को यज्ञोपवीत धारण कराये तथा सामाजिक बुराईयों को कटिबद्ध होकर दूर करने के संकल्प दिलवाये। बहन पूनम आर्या ने शिविरार्थी कन्याओं को समझाते हुए ईश्वर एवं योग के विषय में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि शिक्षित संस्कारित नारी ही मानव का निर्माण कर सकती है। क्योंकि माँ बच्चे का पहला गुरु होती है। यदि गुरु ही संस्कारित नहीं होंगे तो बच्चों में संस्कार कैसे पैदा होंगे। उन्होंने बहनों को धर्म के नाम पर अन्धश्रद्धा से दूर रहने व अन्धविश्वास को अपने जीवन से दूर करने का आह्वान किया। बहन प्रवेश आर्या ने कन्याओं को संस्कार, चरित्र, ईमानदारी, नैतिकता, राष्ट्रभक्ति, ईश्वरभक्ति को जीवन में अपनाने पर बल दिया। शिविर में कन्याओं ने जूडो, कर्राटे तथा अन्य आकर्षक व्यायाम आदि का प्रदर्शन कर दर्शकों को आश्चर्य चकित कर दिया।

इस सम्पूर्ण शिविर सफल बनाने में डॉ. धीरज सिंह के अतिरिक्त ए.के.पी. इण्टर कालेज की प्रधानाचार्या श्रीमती शशि बाला, आर्य समाज के प्रधान श्री घनश्याम दास सक्सेना एडवोकेट, मंत्री श्री रामस्वरूप आर्य, कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्र पाल बाधवा तथा कर्मठ कार्यकर्ता श्री संजय वर्मा ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन हरिद्वार में पारित किये जाने वाले मुख्य प्रस्ताव एवं तैयारी के सम्बन्ध में विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं की हुई महत्त्वपूर्ण बैठक

गुरुकुल शिक्षा पाठ्यक्रम में शिल्प विद्या, समान शिक्षा, निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का समावेश होना अनिवार्य हो

– स्वामी अग्निवेश

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली के रूप में प्रस्तुत किया जायेगा

– स्वामी आर्यवेश

केन्द्रीय शिक्षा निदेशालय स्थापित किया जाये

– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही वैकल्पिक शिक्षा पद्धति हो सकती है

– प्रो. विट्ठलराव आर्य

डॉ. वीरेन्द्र अलंकार अध्यक्ष दयानन्द पीठ एवं संस्कृत विभाग पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़, डॉ. जयदेव वेदालंकार पूर्व प्रस्तोता गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, स्वामी सच्चिदानन्द जी यमुनानगर, डॉ. उदयन आर्य प्रधानाचार्य गुरुकुल करतारपुर, पं. माया प्रकाश त्यागी कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, स्वामी धर्मेश्वरानन्द मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र., श्री प्रेमपाल शास्त्री प्रधान आर्य पुरोहित सभा दिल्ली, डॉ. पूर्ण सिंह डबास संरक्षक आर्य समाज साकेत, श्री अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, श्रीमती गायत्री मीणा प्रधान आर्य समाज नोएडा, प्रो. यशवीर लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विश्वविद्यालय आदि ने महत्त्वपूर्ण सुझाव रखे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिनांक 6, 7 व 8 जुलाई, 2018 को गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के मुख्य प्रस्ताव एवं तैयारी के सम्बन्ध में वैदिक विद्वानों एवं सक्रिय कार्यकर्ताओं की महत्त्वपूर्ण बैठक दिनांक 29 मई, 2018 को सभा मुख्यालय 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई। बैठक में सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने मुख्य प्रस्ताव की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की तथा उपस्थित विद्वतजनों से अनुरोध किया कि वे अपने अमूल्य सुझाव देकर मुख्य प्रस्ताव तैयार करने में सहयोग करें। प्रो. विट्ठलराव जी द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव के अंश निम्न प्रकार हैं :–

1. महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं ऋषि–मुनियों की परम्परा में आर्ष शिक्षा पद्धति भारतीय जीवनशैली की मुख्यधारा रही है। इस पद्धति ने मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने, समाज और राष्ट्र से जोड़ने तथा उसके अस्तित्व को प्रकृति के साथ जोड़कर जीने का विधान बनाया है। भारत और पूरे विश्व के देश जिस विकास के मॉडल को लेकर कार्य कर रहे हैं उसने मानव अस्तित्व के साथ पशु–पक्षी, कीट–पतंग आदि के अस्तित्व को भी खतरे में डाल दिया है। यहाँ तक कि प्रकृति से सम्बन्धित स्रोतों को भी सम्पूर्ण विनाश की तरफ ले जाते हुए विश्व ही नहीं ब्रह्माण्ड में भी खतरा पैदा कर दिया है। अतः विकास की अवधारणा को मानव, पशु–पक्षी और प्रकृति के अस्तित्व से जोड़ते हुए आगे बढ़ाने की जरूरत है। अस्तित्व की भावना को शिक्षा पद्धति के द्वारा ही लागू किया जा सकता है। शिक्षा की मूल भावना जहाँ व्यक्ति निमार्ण की हो वहीं पर समष्टि निर्माण व न्याय की हो। समष्टि निर्माण व्यक्ति की उदारवादी विचारधारा से सम्बन्ध रखती है। अतः वेद की भी यह उक्ति कि – **यत्र विश्वम् भवत्येकनीडम्** की भावना अर्थात् हम सब एक घोसले में रहने वाले प्राणी हैं। यही वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को व्यक्त करती है। इस भावना से जुड़ी हुई आर्ष शिक्षा प्रणाली जहाँ अपनी पुरानी संस्कृत और संस्कृत साहित्य की धरोहर की रक्षा करती है वहीं पर स्व व स्वाभिमान की भावना को भी जगाती है तथा विश्व को एक समुदाय के रूप में आगे बढ़ाने का संस्कार देती है। यह संस्कार ही परोपकार, प्रेम, न्याय, आत्मीयता की मूल भावना से जुड़ी आध्यात्मिकता की कड़ी है। अतः इस आध्यात्मिकता की मूल अवधारणा से जुड़कर विकास की अवधारणा को सुनिश्चित करने की शिक्षा पद्धति ही वैकल्पिक शिक्षा पद्धति हो सकती है। अतः इस पर चिन्तन कर सरकारों को, समाज को प्रेरित करने का कार्य गुरुकुल महासम्मेलन के द्वारा होना चाहिए।

2. आर्य समाज व आर्य समाज की विचारधारा या स्वामी दयानन्द सरस्वती और ऋषि–मुनियों की परम्परा से जुड़कर जितने भी गुरुकुल भारत या भारत के बाहर संचालित हो रहे हैं उन सबको एक जगह न केवल आने की जरूरत है, बल्कि एक आर्ष पद्धति के पाठ्यक्रम को भी बनाकर सरकारी संस्कृत शिक्षा बोर्डों से मान्यता प्राप्त करने की भी जरूरत है। इस ओर कुछ काम हुआ है पर अभी प्राचीन शिक्षा के पाठ्यक्रम को विशेष रूप से लागू करवाने के लिए तथा सभी प्रान्तों में काम कर रहे गुरुकुलों को मान्यता दिलवाने के लिए केन्द्रीय शिक्षा बोर्ड के गठन पर भी जोर दिया जाना चाहिए। इसके सम्भव होने पर गुरुकुलों में पढ़े–लिखे छात्र अपनी प्रतिभाओं को सीमित दायरे से विस्तृत दायरे में ले जाने के काबिल हो जाते हैं और विश्व प्रतिभाओं के सामने अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने तथा अपने आपको समाजोपयोगी बनाने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के संदर्भ में यह प्रस्ताव इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि

शेष पृष्ठ 6 पर

चलो हरिद्वार! चलो हरिद्वार!!

ओ३म्

पारवण्ड खण्डिनी पताका व गुरुकुल परम्परा की ऐतिहासिक भूमि गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के परिसर में

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन

दिनांक : 6, 7 व 8 जुलाई, 2018

स्थान : गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

(विद्यालय विभाग के प्रांगण में)

आर्य समाज के इतिहास में पहली बार आयोजित

गुरुकुलों के इस महाकुम्भ में भारी संख्या में पहुँचने की आर्य समाजों, प्रान्तीय सभाओं से अपील!

आप सभी से प्रार्थना है कि भारी संख्या में पधारकर तन–मन–धन से सहयोग करें।

आयोजक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष :– 011–23274771, 23260985, ई–मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

पृष्ठ–3 का शेष

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन हरिद्वार में पारित किये जाने वाले मुख्य प्रस्ताव एवं तैयारी के सम्बन्ध में विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं की हुई महत्त्वपूर्ण बैठक

दिन–प्रतिदिन हो रहे नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारण समाज टूटता हुआ नजर आ रहा है और भौतिकवादी, भोगवादी बनता जा रहा है। अतः अध्यात्म की मूल अवधारणा को व्यक्ति से लेकर समाज तक मजबूत करने के लिए सरकारों को नीतिगत फैसले लेने के लिए बाध्य किया जाये। इस कार्य में सभी गुरुकुल इकट्ठे होकर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

3. भारतीय शिक्षा पद्धति में, शिक्षा का दायित्व समाज और राजाओं पर रहा है। आज के इस आधुनिक तथा आर्थिक दुनिया में मुख्य रूप से यह दायित्व सरकारों पर है। आज तक गुरुकुलों की व्यवस्था सामाजिक दायित्व को समझने वाले दान–दाताओं के भरोसे चलती रही है। और पिछले 100 वर्षों से इस दायित्व को दानी महानुभाव और आर्य समाज के प्रबुद्ध महानुभावों और आचार्यों के माध्यम से चलाते हुए एक अद्‌भुत इतिहास की रचना की है और 100–125 वर्षों के इतिहास में कई महात्माओं ने, विद्वानों ने अपना सब कुछ त्यागकर, सर्वात्मना समर्पित होकर प्राचीन ऋषि–मुनियों की परम्परा को पुनर्स्थापित करने के लिए कार्य किया है और कर रहे हैं। पिछले 100 साल के इतिहास में गुरुकुलों ने अनेकों दिग्गज विद्वानों को भी पैदा किया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्देशानुसार आर्ष शिक्षा प्रणाली को न केवल स्थापित किया बल्कि विश्व में संस्कृत, व्याकरण और साहित्य में, वेद, दर्शन और उपनिषद् के क्षेत्र में आर्य विद्वानों का कोई भी सानी नहीं रहा है और न है। ऐसी अभूतपूर्व शिक्षा प्रणाली को चलाकर आर्य समाज ने या आर्य समाज के माध्यम से विद्वानों ने जो कार्य किया है वह ऐतिहासिक धरोहर रही है। **अतः आवश्यक है कि ऐसे गुरुकुलों को तथा ऐसी शिक्षा प्रणाली को सुरक्षित रखने और आगे चलाये रखने के लिए सरकारों के द्वारा गुरुकुलों को आर्थिक रूप से मदद दिलवाकर उसको मजबूती प्रदान की जाये।**

इस अवसर पर विश्वविख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने उपरोक्त प्रस्ताव में शिल्प विद्या, समान शिक्षा, निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा का समावेश करने का सुझाव दिया। सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने घोषणा की कि यह गुरुकुल महासम्मेलन, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करेगा तथा सरकार के समक्ष एक प्रभावशाली मेमोरेण्डम प्रस्तुत करके माँग करेगा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को प्रभावी बनाने के लिए विशेष आर्थिक पैकेज तैयार करके उसे क्रियान्वित करे। बैठक में स्वामी प्रणवानन्द जी ने कहा कि केन्द्रीय शिक्षा निदेशालय स्थापित कर 12वीं से एम.ए. तक की शिक्षा में आर्ष पाठ्य विधि का पाठ्यक्रम तथा वैदिक मान्यताओं को पढ़ाने की व्यवस्था सुनिश्चित की जाये।

सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने कहा कि प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही वैकल्पिक शिक्षा पद्धति हो सकती है। अतः इस पर चिन्तन कर सरकारों को व समाज को प्रेरित करने का कार्य गुरुकुल महासम्मेलन के द्वारा होना चाहिए। सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने आशा व्यक्त की कि यह गुरुकुल महासम्मेलन गुरुकुलों के इतिहास में एक मील का पत्थर सिद्ध होगा। बैठक में दयानन्द पीठ एवं संस्कृत विभाग पंजाब विश्वविद्यालय के अध्यक्ष डॉ. वीरेन्द्र अलंकार, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व प्रस्तोता डॉ. जयदेव वेदालंकार, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, नशाबंदी परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी यमुनानगर, स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी नित्यानन्द जी, गुरुकुल करतारपुर के प्रधानाचार्य डॉ. उदयन आर्य, आर्य समाज साकेत के संरक्षक एवं प्रसिद्ध विद्वान डॉ. पूर्ण सिंह डबास, आर्य पुरोहित सभा के प्रधान श्री प्रेमपाल शास्त्री, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य, मानव सेवा प्रतिष्ठान के श्री रामपाल शास्त्री, श्री रणवीर सिंह शास्त्री सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य बवाना, डॉ. अजय शास्त्री योग विभाग जे.एन.यू., पं. राजवीर आर्य मुरादनगर, श्री भद्रकाम वर्णी, हरियाणा लोकसम्पर्क विभाग के सेवानिवृत्त ज्वाइंट डाइरेक्टर श्री महिपाल सिंह ढुल, वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, आर्य समाज नोएडा की प्रधाना श्रीमती गायत्री मीणा, मंत्री कै. अशोक गुलाटी, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री महेन्द्र भाई, उपाध्यक्ष श्री रामकुमार सिंह आर्य आदि ने भी अपने सुझाव प्रस्तुत किये।

महासम्मेलन हेतु आर्य समाज नजफगढ़ के प्रधान श्री राव रघुनाथ सिंह आर्य ने सवा लाख रुपये तथा श्रीमती गायत्री मीणा ने एक लाख रुपये की राशि संग्रह करके देने की घोषणा की। इसी प्रकार डॉ. पूर्ण सिंह डबास ने 11 हजार, श्री महिपाल सिंह ढुल ने 5100/– तथा श्री के.के. सेठी आर्य समाज प्रताप नगर ने 5 हजार रुपये की राशि दान स्वरूप देने की घोषणा की।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से भी स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने अपनी सभा की ओर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन देते हुए बताया कि उत्तर प्रदेश की समस्त जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं, स्थानीय आर्य समाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं को निर्देश दिया गया है कि वे भारी संख्या में हरिद्वार पहुँचें तथा तन–मन–धन से सहयोग देकर गुरुकुल महासम्मेलन को सफल बनायें। इसी प्रकार स्वामी रामवेश जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी ने भी घोषणा की कि वे सम्मेलन होने तक दिन–रात एक करके जन–सम्पर्क तथा धन–संग्रह का कार्य करेंगे एवं अपने और सहयोगियों को भी इस कार्य में जुटने के लिए प्रेरित करेंगे।

गुरुकुल महासम्मेलन में प्रस्तुत किये जाने वाले प्रस्ताव के सम्बन्ध में गुरुकुल पौंधा देहरादून के आचार्य डॉ. धनंजय कुमार के संयोजकत्व में विद्वानों की एक समिति प्रस्ताव का मसौदा तैयार करेगी और सभा के पदाधिकारी एवं अन्य विद्वानों से संस्तुति लेकर उसे सम्मेलन में पारित कराया जायेगा। बैठक में उपस्थित समस्त विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं का उत्साह अद्‌भुत था और सभी ने यह संकल्प लिया कि सम्मेलन को पूरी ताकत लगाकर सफल किया जायेगा। दिल्ली से श्री राम कुमार सिंह आर्य के संयोजन में 10 बसें भरकर आर्यजन महासम्मेलन में पहुँचेंगे। बैठक का समापन बड़े उत्साह के वातावरण में हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन, हरिद्वार के लिए अभी से अपना आरक्षण सुरक्षित करवा लें

दिल्ली से हरिद्वार जाने वाली ट्रेनों का विवरण निम्न प्रकार है :–

1. Dehradun EXP (19019)
(NZM to HW)
Time : 5.45 - 14.40

2. Dehradun Shtbdi (12017)
(NDLS to HW)
Time : 6.45 - 11.22

3. Haridwar EXP (22917)
(NZM to HW)
Time : 11.00 - 15.50

4. Ujjaini Express (14309)
(NZM to HW)
Time : 11.30 - 17.20

5. IND DDN Express (14317)
(NZM to HW)
Time : 11.30 - 17.20

6. Dehradun EXP (22659)
(NZM to HW)
Time : 12.55 - 18.45

7. Dehradun EXP (12687)
(NZM to HW)
Time : 21.10 - 03.05

8. UDZ HW EXP (19609)
(DLI to HW)
Time : 3.40 - 10.25

9. LTT HW AC SUP (12171)
(NZM to HW)
Time : 7.10 - 13.15

10. Uttaranchal EXP (19565)
(NDLS to HW)
Time : 11.00 - 16.40

11. Utkal Express (18477)
(NZM to HW)
Time : 15.00 - 20.55

12. DDN Janshtbdi (12055)
(NDLS to HW)
Time : 15.20 - 19.50

13. Mussoorie EXP (14041)
(DLI to HW)
Time : 22.15 - 06.05

14. Nanda Devi EXP (12205)
(NDLS to HW)
Time : 23.50 - 3.52

15. Haridwar EXP (12911)
(NZM to HW)
Time : 11.00 - 16.40

नोट : (NZM) का अर्थ हजरत निजामुद्दीन, (NDLS) का अर्थ नई दिल्ली, (DLI) का अर्थ पुरानी दिल्ली, (HW) का अर्थ हरिद्वार।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

आर्य विद्यापीठ गंगाना, सोनीपत, हरियाणा में

वार्षिक यज्ञ एवं प्रीति भोज का शानदार कार्यक्रम किया गया आयोजित

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हुआ प्रवचन

प्रतिवर्ष की भांति 24 मई, 2018 को आर्य विद्यापीठ, दयानन्द उच्च विद्यालय ग्राम गंगाना, जिला–सोनीपत में शानदार यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन किया गया। श्री कृष्ण पूर्व सरपंच तथा उनके भाई श्री बलराम आर्य के निमंत्रण पर कई गाँव के प्रतिष्ठित लोग तथा गंगाना गांव के सभी जिम्मेदार महानुभाव सत्संग में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ में यजमान स्वयं पूर्व सरपंच श्री कृष्ण आर्य बने। यज्ञ के उपरान्त सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का प्रेरणादायक एवं सारगर्भित प्रवचन हुआ जिसे उपस्थित श्रोताओं ने पूरी तन्मयता के साथ सुना।

स्वामी आर्यवेश जी ने पंचमहायज्ञों का महत्त्व एवं मनुष्य जीवन की सार्थकता विषय पर विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि यह मानव का चोला जन्म–जन्मान्तरों का प्रतिफल है। अतः इसे व्यर्थ न गंवायें। इस मनुष्य चोले को सार्थक बनाने के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक मनुष्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूपी पुरुषार्थ चतुष्टय को अपने जीवन में अपनाये। धर्म का आचरण, धर्मानुसार अर्थोपार्जन तथा धर्मानुसार जीवन के सभी दायित्व निभाने से मनुष्य मुक्ति में जा सकता है। अतः जो व्यक्ति निष्ठा एवं गम्भीरता के साथ पांच महायज्ञों का पालन करेगा तथा धर्मानुसार आचरण करेगा वह निश्चित रूप से मुक्ति का अधिकारी होगा। आश्चर्य की बात है कि प्रत्येक मनुष्य इन सब बातों को सुनने व जानने के बावजूद भी इन्हें अपने जीवन में अपनाने का प्रयत्न नहीं करता, बल्कि भौतिकवाद एवं भोगवाद की चकाचौंध में संलिप्त होकर अपने जीवन को नष्ट करने में लगा रहता है। अतः अज्ञान के इस आवरण को हटाने की जरूरत है। स्वामी आर्यवेश जी ने इसके लिए ब्रह्मयज्ञ (ईश्वर उपासना), ईश्वरीय वाणी वेद आदि शास्त्रों का स्वाध्याय, देवयज्ञ (अग्निहोत्रादि), पितृयज्ञ (माता, पिता व बुजुर्गों की सेवा सुश्रुशा), बलिवैश्वदेवयज्ञ (कीट, पतंग, पशु–पक्षी आदि सभी प्राणियों के प्रति करुणा, दया एवं उदारता की भावना) तथा अतिथि यज्ञ (विद्वानों, तपस्वी, संन्यासियों तथा अनुभवी बुजुर्गों का सत्कार तथा उनसे ज्ञान अर्जित करना) इन उपरोक्त पांच कर्त्तव्यों का निष्ठा के साथ निर्वहन करने वाला व्यक्ति भी अपने जीवन को सार्थक बना सकता है। स्वामी जी ने उपस्थित लोगों को शराब, कन्या भ्रूण हत्या तथा धार्मिक अन्धविश्वास छोड़ने का संकल्प भी दिलवाया। सत्संग के उपरान्त प्रीति भोज की भी व्यवस्था थी जिसमें सभी लोगों ने स्वादिष्ट भोजन का आनन्द लिया।

आर्य वीर एवं वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर मुरादाबाद के समापन समारोह में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हुआ ओजस्वी उद्‌बोधन

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जनपद मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में 20 मई से 27 मई, 2018 तक एस.एस. इण्टर कॉलेज, स्टेशन मार्ग, मुरादाबाद में आयोजित आर्य वीर एवं वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर का समापन समारोह 27 मई, 2018 को सायं 4 बजे से 7 बजे तक बड़ी भव्यता के साथ आयोजित हुआ। समारोह की अध्यक्षता आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जनपद मुरादाबाद के प्रधान श्री अजब सिंह आर्य ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने आर्य वीरों, वीरांगनाओं तथा भारी संख्या में उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित किया।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्‌बोधन में युवा निर्माण पर बल देते हुए जनता का आह्‌वान किया कि अश्लीलता, नग्नता एवं उच्छृंखलता से ओत–प्रोत फिल्मों एवं अन्य प्रचार माध्यमों के द्वारा युवा पीढ़ी को चारित्रिक पतन की ओर धकेला जा रहा है जिससे देश का भविष्य खतरे में दिखाई देता है। स्वामी जी ने कहा कि जिस देश में युवा चारित्रिक एवं नैतिक रूप से पतन की ओर जाते हैं वह देश कभी भी उठ नहीं सकता। अतः आवश्यकता इस बात की है कि युवा पीढ़ी को संस्कारित एवं शिक्षित करने पर बल दिया जाये, उन्हें नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा दी जाये तथा देशभक्ति, परोपकार, ईमानदारी एवं समाजसेवा आदि गुणों से ओत–प्रोत बनाया जाये। स्वामी आर्यवेश जी ने 6, 7 व 8 जुलाई, 2018 को गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन में भारी संख्या में पहुँचने का आह्‌वान किया तथा आर्य वीरदल के कार्यकर्ताओं को भी सम्मेलन में पहुँचकर व्यवस्था संभालने के लिए अनुरोध किया।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने कहा कि युवा किसी भी राष्ट्र की रीढ़ होते हैं और उनका निर्माण करना ही राष्ट्र का निर्माण करना है। आर्य वीरदल इस कार्य को पूरी निष्ठा के साथ कर रहा है। अतः सभी को इस कार्य में अपना योगदान देना चाहिए। समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द एडवोकेट, पहलवान धर्मेन्द्र आर्य भी स्वामी जी के साथ पधारे हुए थे। उनके अतिरिक्त प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री विनय लोहिया, आर्य वीरदल उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष श्री पंकज आर्य, आर्य वीरदल के प्रधान शिक्षक श्री हरिसिंह आर्य, आयकर आयुक्त श्री युद्धवीर सिंह आदि के अतिरिक्त आर्य वीरदल के जिला अधिष्ठाता श्री जयगोपाल आर्य, जिला संचालक श्री लोकेश सिंह आर्य, जिला मंत्री श्री विशेष कुमार आर्य, जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के संरक्षक डॉ. अभय श्रोत्रिय, जिला सभा के मंत्री श्री अमरीश कुमार त्यागी, जिला सभा के कोषाध्यक्ष श्री विनोद कुमार गुप्ता, शिविर संयोजिका श्रीमती सुदेश आर्या, शिविर संयोजक श्री जितेन्द्र आर्य, शिविराध्यक्ष श्री अरविन्द आर्य बन्धु, एस.एस. कालेज के प्रधानाचार्य श्री वी.एस. यादव, मंच संचालक श्री यशवन्त सिंह त्यागी, आर्य वीरदल पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष श्री रमेश चन्द्र एडवोकेट आदि भी मंच पर विराजमान थे। पूरे आयोजन के प्राण तथा आर्य वीरदल पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र आर्य गांधी ने भयंकर गर्मी के मौसम में अद्‌भुत पुरुषार्थ करके सम्पूर्ण शिविर को सफलता के चरम शिखर तक पहुँचाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। समारोह में आर्य वीर एवं आर्य वीरांगनाओं ने मार्च पास्ट करके अपने अनुशासन का परिचय दिया तथा विविध आकर्षक क्रियाओं के द्वारा उपस्थित जन–समूह को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्री हरि सिंह आर्य के कुशल प्रशिक्षण एवं निर्देशन में आर्य वीरदल के सभी योग्य शिक्षकों ने लगभग 450 आर्य वीरों एवं वीरांगनाओं को प्रशिक्षण देकर तैयार किया। शिविर अत्यन्त सफल रहा। जिला सभा की ओर से सभी आगन्तुक अतिथियों का स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया गया।

संस्कृता स्त्री पराशक्तिः ओ३म् संस्कारी स्त्री परम शक्ति है

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन एवं महिला समता मंच के संयुक्त तत्वावधान में कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

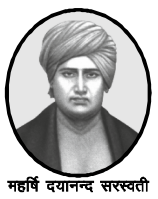
महर्षि दयानन्द सरस्वती

दिनांक : 6 से 12 जून, 2018 तक

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आर्या), ग्राम-टिटौली, जिला-रोहतक (हरियाणा)

आशीर्वाद : स्वामी आर्यवेश, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

स्वामी इन्द्रवेश

500 कन्याएँ भाग लेंगी

कन्याओं को चरित्र, नैतिकता, साहस, स्व-सुरक्षा एवं संयम की भावनाओं से ओत-प्रोत करने के लिए शिविर में अधिक से अधिक कन्याओं को भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

शिविर में विशेष

- राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जाएगी।
- उच्च कोटि की व्यायामाचार्यों द्वारा योगासन, प्राणायाम, जूडो कराटे आदि शारीरिक एवं आत्म रक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- वैदिक विद्वानों द्वारा सन्ध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर चर्चा
- चर्चित महिलाओं द्वारा जीवन में सफलता के गुर सिखाए जायेंगे।
- व्यक्तित्व विकास, वक्तृत्व कला एवं आत्म विश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जायेगा।

आवश्यक नियम व निर्देश

- इच्छुक छात्राएं 100 रुपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश पत्र अपने माता-पिता या विद्यालय के प्राचार्य द्वारा अनुमोदित कराकर **5 जून, 2018** तक प्रान्तीय कार्यालय में जमा करवा दें।
- वेशभूषाः- सफेद सूट, सफेद जुराब, सफेद जूते, केसरिया दुपट्टा, ट्रैक-पैंट, टी-शर्ट, ऋतु अनुकूल बिस्तर, कापी, पैन, टार्च आदि साथ लाएं।
- कोई भी कीमती सामान अपने साथ न लाएं।
- अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।
- भोजन की व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क रहेगी।

युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी की 12वीं पुण्यतिथि के अवसर पर 12 जून, 2018 को युवा संकल्प समारोह का होगा भव्य आयोजन

निवेदक

कु. पूनम आर्या
शिविराध्यक्ष

श्रीमती सुनीता आर्या
सह-संयोजक
9416817794

कु. प्रवेश आर्या
संयोजक
9416630916

प्रबन्ध समिति : कु. रीकू आर्या (रोहतक), कु. विकास आर्या (रोहतक), कु. मंजू आर्या, जगमतिमलिक कैथल, कु. शशि आर्या (रोहतक), राजबाला आर्या, कु. सोनिया व विनिता, सुषमा आर्या, सुमन आर्या, मुकेश आर्या, संगीता आर्या, पूजा आर्या, इन्दू आर्या, किरण आर्या, ज्योति, सुनीता, कीर्ति आर्या, रीमा आर्या, पूनम आर्या।

कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, ग्राम-टिटौली, जिला-रोहतक (हरियाणा), email : yuvakparishad@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के अवसर पर

साहित्य तथा अन्य विक्रेताओं के लिए

स्टालों का आरक्षण प्रारम्भ

पहले आओ – पहले पाओ

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के अवसर पर आयोजित पुस्तक मेले के लिए स्टालों का आरक्षण प्रारम्भ हो गया है। इस अवसर पर देश–विदेश के हजारों आर्यजन तथा गणमान्य व्यक्ति पधारेंगे जिससे पुस्तक विक्रेता भाईयों को वैदिक साहित्य के प्रचार–प्रसार का सुनहरा अवसर प्राप्त होगा। अन्य सामग्री विक्रेताओं के लिए भी स्टाल उपलब्ध है। 15X15 के स्टाल बनाये जायेंगे जिनका शुल्क मात्र 3 हजार रुपये रखा गया है। शुल्क राशि 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम से चैक/ड्राफ्ट द्वारा सार्वदेशिक सभा कार्यालय में भेजें। असुविधा से बचने के लिए अग्रिम राशि भेजकर अपने स्टालों को अविलम्ब सुरक्षित करा लें। सभा के उपमंत्री श्री मधुर प्रकाश जी से मो.:–9810431857 पर शीघ्रातिशीघ्र सम्पर्क करें।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार 6, 7, 8 जुलाई, 2018

सम्मेलन सम्बन्धित जानकारी के लिए सम्पर्क करें

9013 783 101, 9849560691, 93 54840454, 701525971, 981043 1857

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

हरिद्वार चलो! **चलो हरिद्वार!!** **हरिद्वार चलो!!!**

देश–विदेश के समस्त आर्यजनों से अपील

भारी संख्या में गुरुकुलों के इस महाकुम्भ में पहुँचें

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन

में

प्रतिष्ठित महानुभावों की उपस्थिति

आचार्य बालकृष्ण
पतंजलि योगपीठ

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
अध्यक्ष गुरुकुल महासम्मेलन

श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत
मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती
संसद सदस्य

यत्र विश्वम् भवत्येकनीडम्

चौ. वीरेन्द्र सिंह
केन्द्रीय इस्पात मंत्री

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार 6, 7, 8 जुलाई, 2018

निवेदक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।